हैना हिप्पो की ठंडी सर्दी

एक सच्ची कहानी

ट्रिश मार्क्स

चित्र: बारबरा नॉटसन

हैना एक दरियाई घोड़ा यानि हिप्पो थी. वो दरियाई घोड़ों के लिए प्रसिद्ध शहर बुडापेस्ट के चिड़ियाघर में रहती थी. हैना और अन्य हिप्पो जमीन से निकलने वाले गर्म झरनों के पानी में रहते और पनपते थे. बुडापेस्ट के लोगों को अपने दरियाई घोड़ों पर गर्व था और वे अक्सर हैना और उसके दोस्तों से चिड़ियाघर में मिलने जाते थे.

एक सर्दी, हालांकि, इतनी ठंड पड़ी कि बुडा और पेस्ट के जुड़वां शहरों के बीच की नदी भी जम गई. उस समय द्वितीय महायुद्ध चल रहा था जिसके कारण लोग और जानवर भूख से मरने लगे थे. लेकिन फिर बुडापेस्ट के लोगों ने अपने प्यारे दरियाई घोड़े को बचाने की एक योजना बनाई.

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई एक सच्ची घटना पर आधारित यह एक दिल को छू लेने वाली कहानी है.

लेखक ट्रिश ने इसे बड़ी खूबसूरती से बताया है.
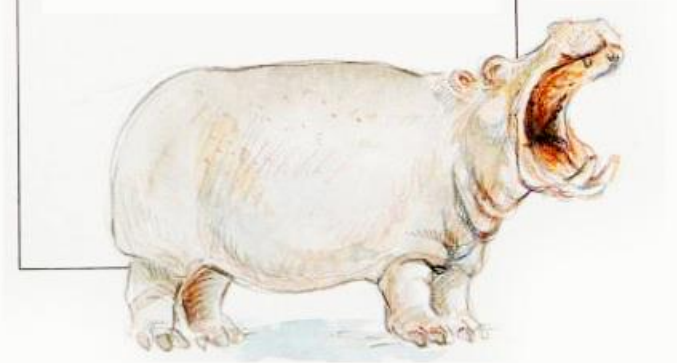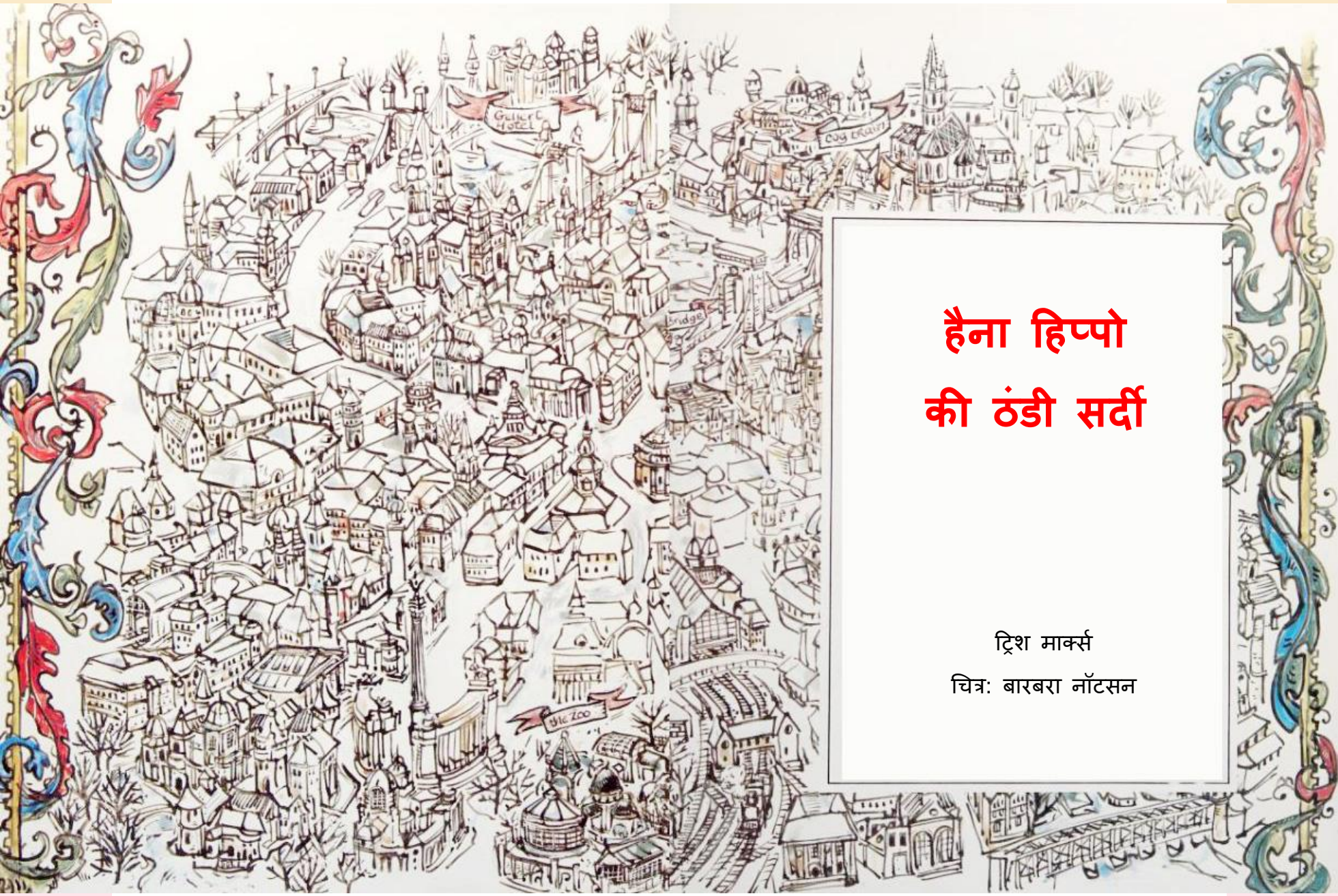
हैना हिप्पो की ठंडी सर्दी

ट्रिश मार्क्स

चित्र: बारबरा नॉटसन

जब मैं छोटा था तो, रविवार मेरा पसंदीदा दिन था. शहर के बाहर मिर्ची मिल में पूरे हफ्ते काम करने के बाद, पापा संडे को आराम करके देर से उठते थे. हफ्ते में छह दिन चाहें गर्मी हो या सर्दी, वो किसानों की गाड़ियों से सूखे मिर्च के भारी बोरे उतारते थे और उन्हें मिर्ची फैक्ट्री की पिसाई मशीन के मुंह में डालते थे, जहां उनका मसाला बनता था. पापा कहते थे कि उनके लिए मशीन के मुंह को लगातार भरना, अपने तीन बच्चों को खिलाने से ज्यादा मुश्किल काम था.

लेकिन वो काम सप्ताह में छह दिनों तक ही चलता था. सातवें दिन, रविवार को, पापा सूरज उगने तक सोते थे. हम उनके रसोई में आने का इंतजार करते थे. वहां वो अपना सूट और लाल टाई और सोने की कफ़-लिंक पहन कर आते थे जो उनके दादा ने उन्हें शादी के समय भेंट किए थे.

"ठीक है, ठीक है," वो कठोर दिखने की कोशिश करते थे. "लगता है कि आज भी मुझे शांति नहीं मिलेगी. मुझे लगता है कि मुझे आग के सामने बैठकर तुम्हारी माँ की बनाई अच्छी कॉफी पीने के लिए कुछ और इंतजार करना होगा. तुम्हारे चेहरे देखकर मुझे लगता है कि तुम लोग आज बाहर जाना चाहते हो."

हम सांसे रोककर उम्मीद रहे थे कि पापा हमसे वो शब्द कहें. हमने पापा और माँ के साथ पूरे बुडापेस्ट की यात्रा की थी, और कभी-कभी आसपास के गाँवों की भी. और हम में से प्रत्येक की कोई पसंदीदा इमारत, पार्क या कोई विशेष मूर्ति थी. मुझे डेन्यूब नदी पर पुल की रखवाली करने वाले नक्काशीदार पत्थर के शेर बहुत पसंद थे. मेरी बहन को गेलर्ट होटल के स्नानागार में जाकर वहां पेंट की हुई टाइलों को देखने में और जमीन से बुदबुदाकर उठने वाली भाप को महसूस करना बेहद पसंद था.

एक जगह थी जो हम सभी की पसंदीदा थी, लेकिन हम पापा से कभी वहां जाने के लिए नहीं कहते थे, क्योंकि वहां पैसे खर्च होते थे. हम जानते थे कि माँ को चीनी और मक्खन खरीदने के बाद हमारे लिए नई पैंट का कपड़ा, और हम में से किसी के लिए नए जूते खरीदने होते थे. पर किसी दिन पापा जब किचन में खड़े होते और अपनी जेब में हाथ डालकर सिक्कों को झंकारते थे और उस समय उनके चेहरे पर बड़ी मुस्कान होती थी. तब हमें पता चलता था कि उस रविवार को हम चिड़ियाघर जायेंगे.
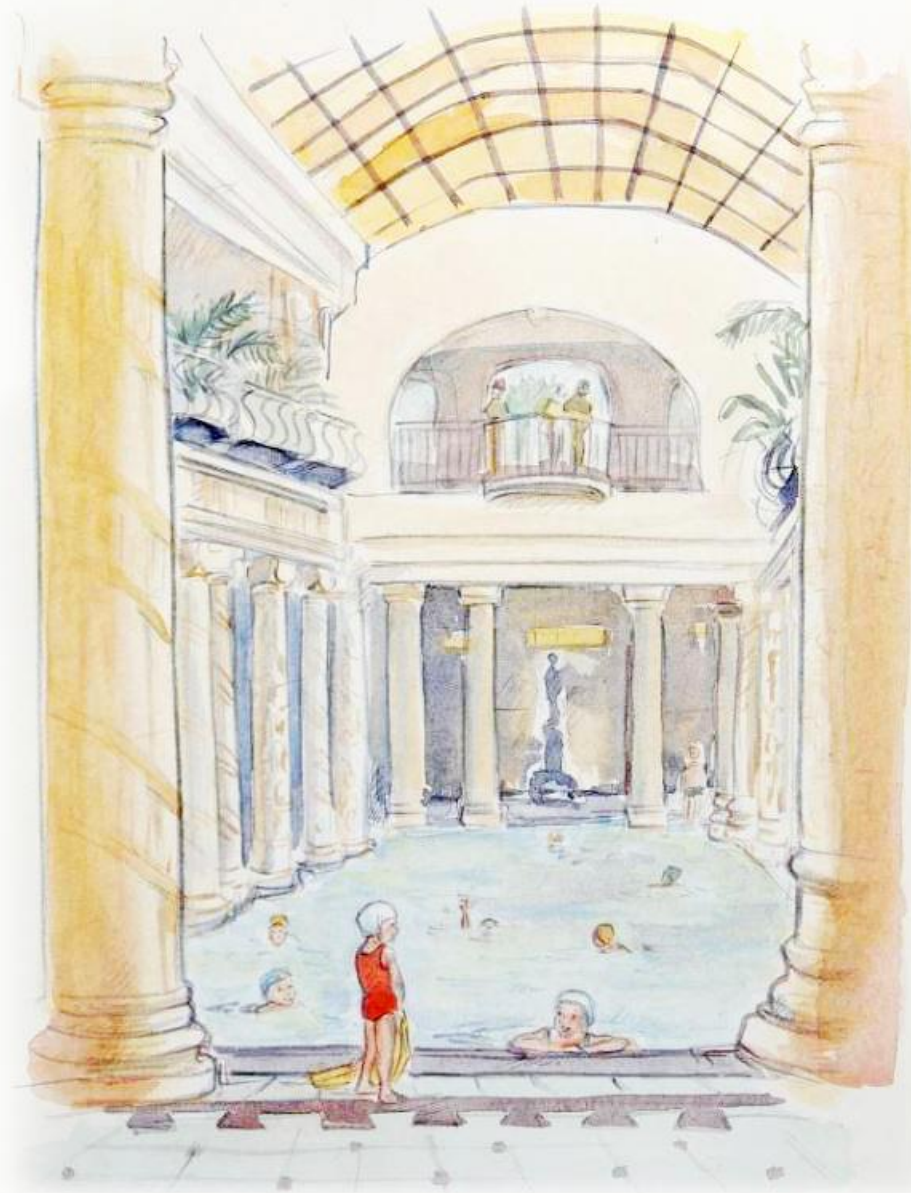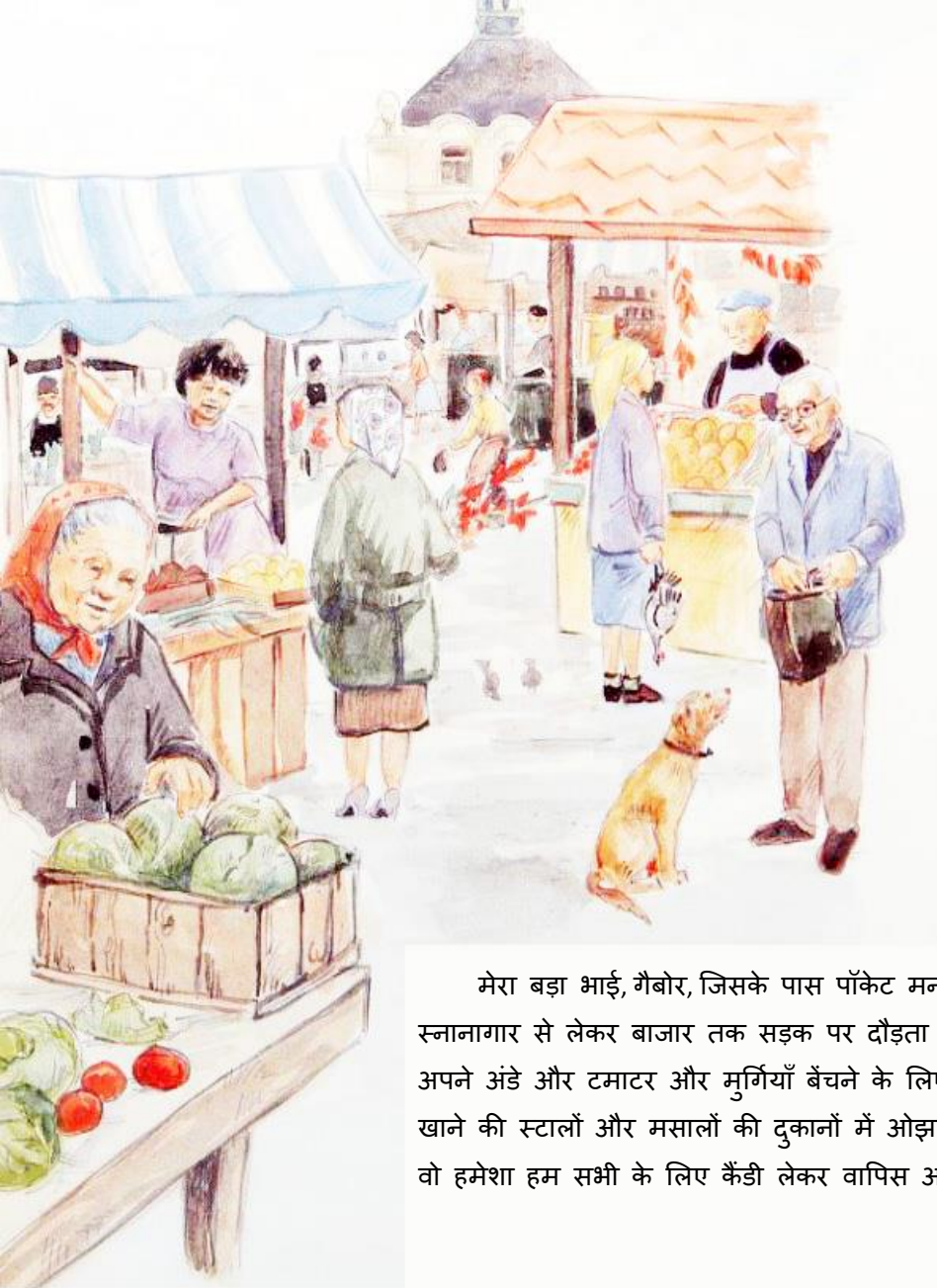
मेरा बड़ा भाई, गैबोर, जिसके पास पॉकेट मनी के पैसे होते थे वो स्नानागार से लेकर बाजार तक सड़क पर दौड़ता था, जहाँ पर किसान अपने अंडे और टमाटर और मुर्गियाँ बेंचने के लिए लाते थे. जल्द ही वो खाने की स्टालों और मसालों की दुकानों में ओझल हो जाता था, लेकिन वो हमेशा हम सभी के लिए कैंडी लेकर वापिस आता था.
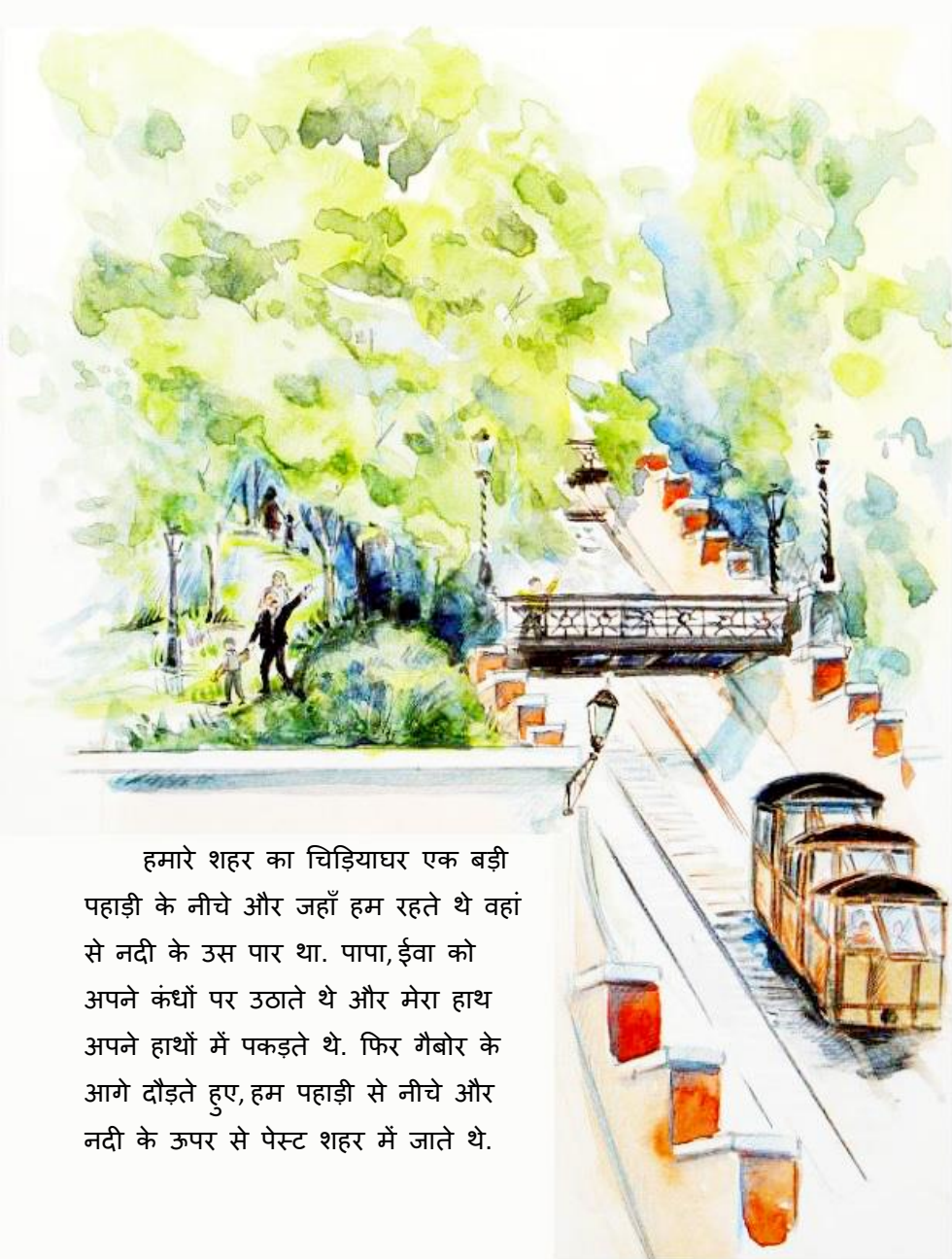
हमारे शहर का चिड़ियाघर एक बड़ी पहाड़ी के नीचे और जहाँ हम रहते थे वहां से नदी के उस पार था. पापा, ईवा को अपने कंधों पर उठाते थे और मेरा हाथ अपने हाथों में पकड़ते थे. फिर गैबोर के आगे दौड़ते हुए, हम पहाड़ी से नीचे और नदी के ऊपर से पेस्ट शहर में जाते थे.

घर वापिस आने के लिए, हम एक पहाड़ी पर चढ़ने वाली छोटी ट्रेन लेते थे, लेकिन पहाड़ी पर नीचे जाते समय हम मज़े में लुका-छिपी का खेल, और हमेशा पापा की पहेलियों को हल करते थे.

"लिटिल टिबोर," वो मुझसे पूछते थे. "देखो लंचिड पुल पर तुम्हारे पसंदीदा शेर, पुल की रखवाली कर रहे हैं, मुझे बताओ कि उन शेरों में क्या कमी है?"

मुझे जवाब पता होता था. मुझे पता था कि उन शेरों की जीभ गायब थी, लेकिन मैंने हमेशा पापा को ही जवाब बताने देता था. और उसके बाद हम पापा की ज़ोरदार हंसी सुनते थे.

जल्द ही हम चिड़ियाघर पहुंचने वाले थे. वहाँ पर गुब्बारे बेंचने वाले मर्द और आइसक्रीम बेंचने वाली औरतें चिड़ियाघर के प्रवेश द्वार के सामने लाइन लगाए खड़े रहते थे.

"जल्दी करो, जल्दी करो," उनमें से कोई चिल्लाता था. "यह हैना के भोजन का समय है!'
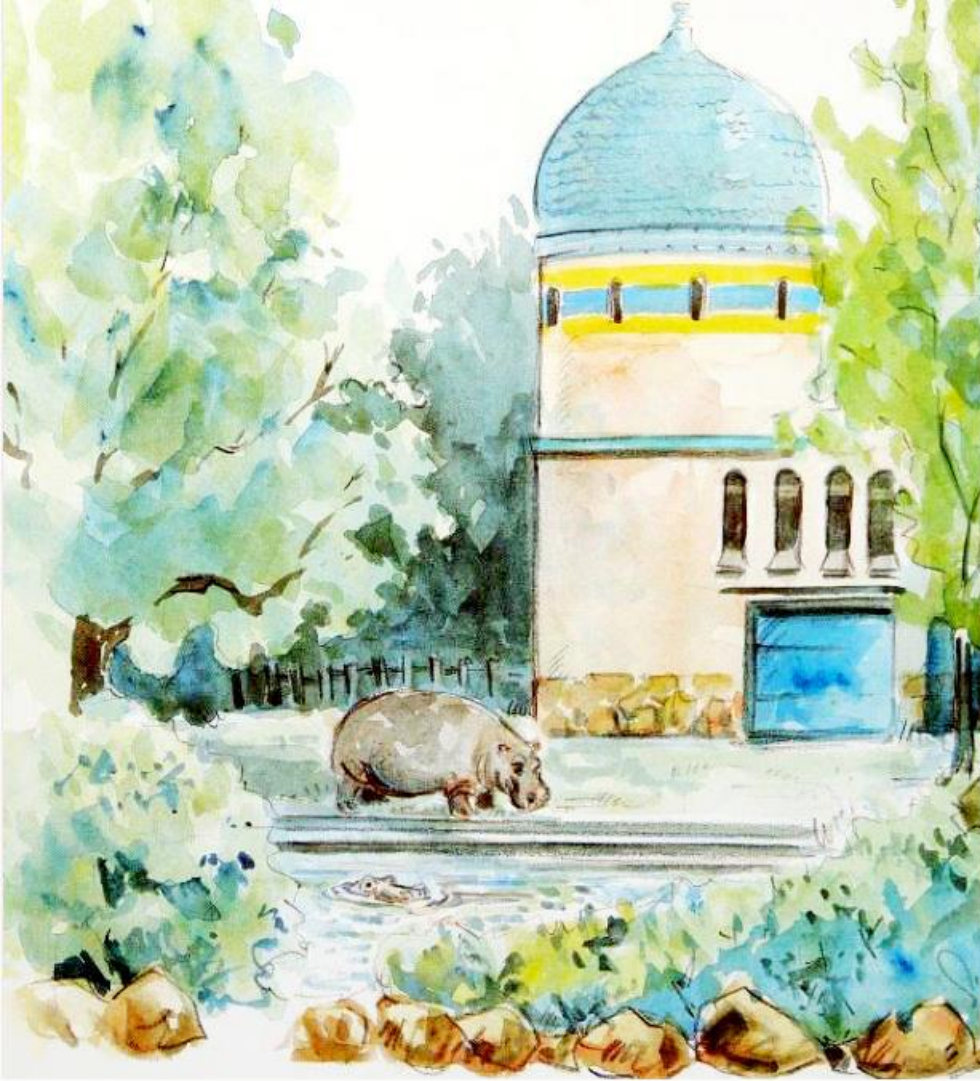
हैना एक दरियाई घोड़ा या हिप्पो थी. हमारा शहर दरियाई घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था. दरियाई घोड़ों को वहां के गर्म पानी के झरनों से प्यार था जो स्वाभाविक रूप से जमीन में से निकलते थे. धीरे-धीरे वे हिप्पो मोटे और स्वस्थ हो गए थे. उनके कई हिप्पो बच्चे भी थे, जिन्हें दुनिया भर के अन्य चिड़ियाघरों में भेजा जाता था.

हमारे शहर के चिड़ियाघर में दरियाई घोड़ों के लिए एक सुंदर घर बना गया था. उनका घर एक छोटे महल जैसा दिखता था. उसमें एक तांबे के गुंबद और सामने एक बड़ा पानी का पूल था, और अंदर अलग-अलग कमरों में भी पूल थे. पूल के आसपास पेड़-पौधे और फूल लगाए गए थे और वहां का पानी हमेशा साफ रहता था.

हैना एक विशेष दरियाई घोड़ा थी. उसे बाहर वाले पूल में, लोगों के करीब रहना पसंद था. वो अक्सर अपनी एक आँख खोलकर सोती थी, इस उम्मीद में, कि वो घास से लदी गाड़ी को, रास्ते से नीचे आते हुए देखे पाएगी. जबकि अन्य दरियाई घोड़े आराम कर रहे होते थे, हैना तब उठती थी जब घास वाली गाड़ी पास के जिराफ़ के घर पहुँचती थी. हैना एकमात्र ऐसी हिप्पो थी जो खाने के लिए एकदम तैयार रहती थी. जब चिड़ियाघर के लोग एक लोहे के पंजे (रेक) से घास को गाड़ी से उतार रहे होते तो हैना का मुंह पूरा खुला होता था.

वो अपना मुंह तब तक खुला रखती थी जब तक उसका मुंह घास से पूरी तरह भर नहीं जाता था. फिर वो बहुत तेजी से अपना मुंह बंद करती थी. फिर एक पल में, उसका मुंह फिर से खुल जाता था, और सारी घास उसके पेट में चली जाती थी. उसे देखकर भीड़ खूब हंसती थी, और उनमें पापा सबसे ज्यादा जोर से हँसते थे. वो एक ऐसी पहेली थी जिसे पापा भी कभी नहीं समझा पाए.

एक सर्दी, बुडा और पेस्ट के जुड़वां शहरों के बीच की नदी जम गई. वो एक बड़ी नदी थी, और इतने पानी के जमने के लिए सर्दी वाकई में बहुत ठंडी रही होगी. लेकिन किसी ने सर्दी के बारे में ज्यादा शिकायत नहीं की, क्योंकि हमारे साथ कुछ उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो रहा था. पूरे यूरोप में, एक युद्ध चल रहा था, और उसके बाहर भी. अब हमारे शहर में नदी के दोनों किनारों पर सैनिक थे और दोनों सेनाओं के सैनिक आपस में लड़ रहे थे.

अब लोग सिर हिलाते, अपने काम पर जाते, फिर वापिस आकर घर के अंदर ही रहते थे. अब पापा हमें रविवार को बाहर नहीं ले जाते थे. हम चूल्हे के ही पास बैठकर अपनी किताबों का अध्ययन करते और अपने फ़टे हुए कपड़ों की मरम्मत करते, और ताज़ी खबरें जानने के रेडियो सुनते थे. लेकिन सैनिक वहीँ रुके रहे, और दिन और भी ठंडे होते गए. फिर धीरे-धीरे पहले हमारा मांस खत्म हो गया, फिर आलू भी. रापा बाजार से केवल कुछ प्याज और गाजर लेकर ही घर आता था, और इन सब्जियों के साथ और हमारे पड़ोसियों की दी पतली मुर्गियों की बदौलत, माँ हमेशा हमारे लिए कुछ सूप बनाने में ज़रूर कामयाब होती थीं.

हम अपने ही भूखे पेटों के बारे में सोचने में इतने व्यस्त थे कि पापा की खबर ने हमें हैरान कर दिया. "चिड़ियाघर के जानवर भी भूखे हैं," उन्होंने कहा. "मैंने सुना है कि सैनिकों के कारण अब शहर में जानवरों के लिए कोई भोजन नहीं आ रहा है. और जब सर्दी इतनी ठंडी हो तो जानवरों को और भी अधिक भोजन की आवश्यकता होती है." हमने हैना के बारे में सोचा, और उसकी चौड़ी मुस्कराहट के बारे में भी. हमने गर्मियों में पैदा हुए हैना के बच्चे और चिड़ियाघर के सभी प्रसिद्ध दरियाई घोड़ों के बारे में भी सोचा. उस रात हम बिस्तर पर लेटते समय खुद को काफी असहाय और उदास महसूस कर रहे थे.

सुबह को पापा किचन में अपने सूट में आए. उनके हाथ उनकी जेब में थे, और उनके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान थी. "हम चिड़ियाघर जा रहे हैं," उन्होंने कहा, "लेकिन मनोरंजन के लिए नहीं. आज हम चिड़ियाघर को बचाने के लिए जा रहे हैं. अगर तुम बच्चे तैयार हो सको, तो तुम भी मेरे साथ चलो, फिर मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि हम वो कैसे करेंगे."
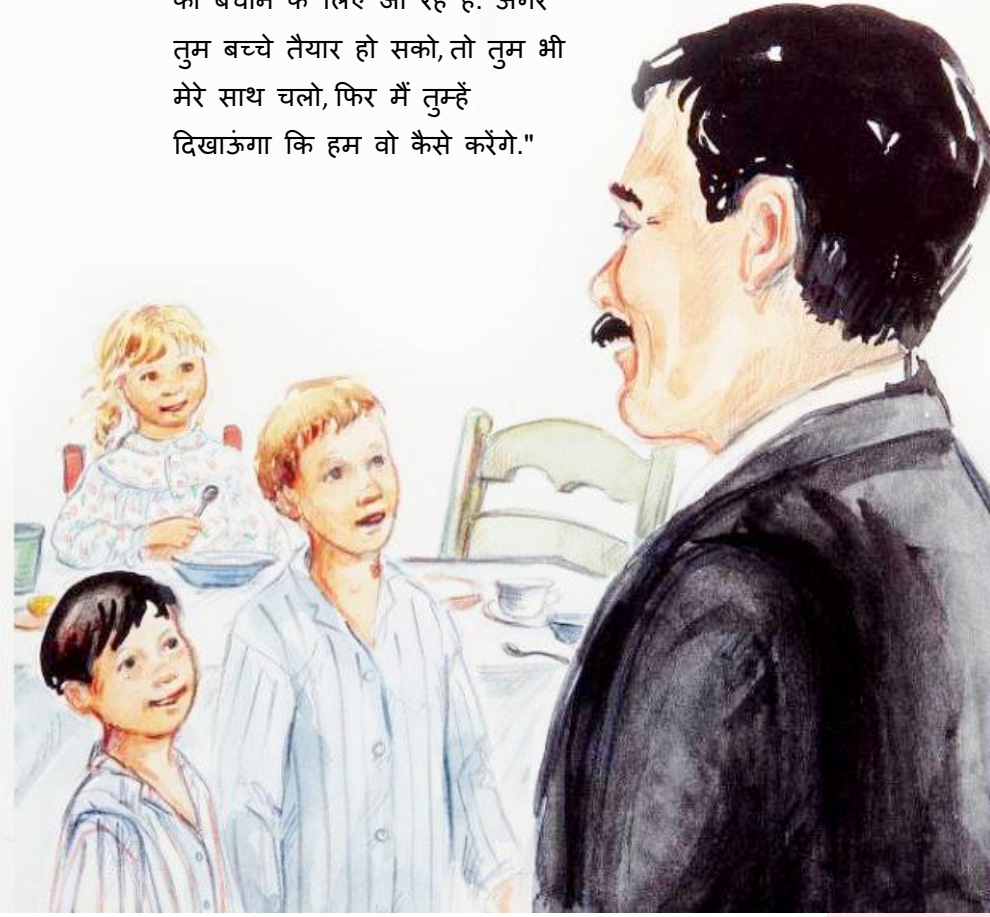
हम अपने कमरे में गए और कुछ ही समय में रसोई में वापस आए. माँ ने हमारे गलों में मफलर लपेटे. माँ के चेहरे से हमें लग रहा था कि उन्होंने और पापा ने दरियाई घोड़ों को बचाने की योजना के बारे में काफी गहराई से सोचकर कोई अच्छा प्लान बनाया होगा. घर से बाहर निकलते समय पापा ने पुआल का बना पायदान (डोर-मैट) और एक पुरानी जोड़ी पुआल की चप्पल उठाईं. गैबॉन, ईवा, और मैं एक-साथ फुसफुसाए, लेकिन हमें पता था कि पापा जल्द ही हमारे साथ वो रहस्य साझा करेंगे.

चिड़ियाघर के रास्ते में पापा ने हमें, अपनी योजना के बारे में बताया. "हम सबसे पहले चिड़ियाघर के इंचार्ज के पास जायेंगे," उन्होंने कहा. "और हम उन्हें अपने साथ हिप्पो हाउस लेकर जाएंगे और उनसे पूछेंगे कि हमारी योजना काम करेगी, या नहीं."

जब हम दरियाई घोड़ों के घर में पहुंचे, तो हमें वहां एक जमा हुआ तालाब और उसके चारों ओर नंगे पेड़ ही दिखाई दिए. ठंडी हवा से बचने के लिए लिए दरियाई घोड़े अंदर अपने कमरों में छिपे हुए थे. हैना अब बाहर हमारा इंतज़ार नहीं कर रही थी और न ही वो एक आँख खोलकर सोई थी. हम तमाम दरियाई घोड़ों में से यह नहीं बता सके कि उनमें से हैना हिप्पो कौन सी थी.

पापा उन जानवरों के पास गए और उन्होंने धीरे से पुआल की चटाई एक हिप्पो की नाक के नीचे रख दी. दरियाई घोड़ा कुछ हिला लेकिन उसने पुआल की चटाई खाई नहीं. फिर पापा एक लोहे का पंजा (रेक) लेकर आए और उससे उन्होंने चटाई को तोड़ डाला. फिर पुरानी चटाई के टुकड़ों को, पंजे के कांटे के सिरों पर फँसाया. फिर पापा ने हमारी फटी चटाई दरियाई घोड़े को भेंट की. उसके बाद बूढ़ा दरियाई घोड़ा ऊपर उठा और उसने अपना मुंह खोला, और फिर चटाई पलक झपकते ही गायब हो गई. "बहुत बढ़िया!" चिड़ियाघर के इंचार्ज ने कहा. "बहुत सुन्दर."

उस दिन के बाद, ठंडी रातों में और सिलेटी सुबहों में, धुंध में, कोहरे में, और बर्फ में, एक पुराने घोड़े द्वारा खींची गई एक पुरानी गाड़ी बुडा और पेस्ट की सड़कों पर घूमती थी. "हिप्पों को खिलाओ, दरियाई घोड़ों के लिए पुआल दान दो." ड्राइवर की आवाज सड़कों पर गूँजती थी.

हमारे शहर के लोग अपने-अपने दरवाज़ों से बाहर निकलकर आते और अपनी पुरानी पुआल की चटाईयां, चप्पलें और टोपियाँ गाड़ी में डाल देते थे. गाड़ी बार-बार भर जाती थी, और बूढ़ा घोड़ा ईमानदारी से उसे खींचकर हैना और चिड़ियाघर के अन्य दरियाई घोड़ों के पास ले जाता था. सर्दियों के अंत तक बुडापेस्ट के लोगों ने दरियाई घोड़ों को नौ हजार टोपियाँ, चटाइयाँ और चप्पलें दान में दीं. उन्हें खाकर दरियाई घोड़े मोटे तो नहीं हुए. लेकिन पुआल के भूसे ने उन्हें उस ठंड और भयावह सर्दी में ज़िंदा ज़रूर रखा.

उस वसंत में हमारे शहर में युद्ध समाप्त हो गया. अब मैं बड़ा हो गया हूं, और कड़ाके की वो सर्दी और सैनिक केवल मेरी स्मृति में हैं. लेकिन बुडापेस्ट में दरियाई घोड़े अभी भी अपने महल में रह रहे हैं और गर्म झरनों के पानी का मज़ा ले रहे हैं. मैं उन दिनों से अब बहुत दूर आ चुका हूँ. हर बार जब मैं दुनिया में किसी भी चिड़ियाघर में कोई दरियाई घोड़ा देखता हूं, तो मैं हैना, पापा और अपने शहर के बहादुर लोगों के बारे में सोचता हूं, जिन्होंने युद्ध के दौरान अपने दरियाई घोड़ों को, नौ हजार पुआल की चटाइयों, चप्पलों और टोपियों देकर बचाया था.

लेखक का नोट

यह कहानी एक सच्ची घटना पर आधारित है. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) के दौरान, हंगरी ने सालों में अपनी सबसे ठंडी सर्दियों का अनुभव किया था. तब बुडा और पेस्ट के जुड़वां शहरों को विभाजित करने वाली डेन्यूब नदी भी जम गई. एक तरफ जर्मन सैनिक थे और दूसरी तरफ रूसी सेना थी. लोग भूखे मर रहे थे, और साथ में चिड़ियाघर में जानवर भी. लेकिन हंगरी के प्रसिद्ध दरियाई घोड़े, जो बुडापेस्ट के झरनों से बहने वाले गर्म पानी में रहते थे, उन्हें बुडापेस्ट के लोगों ने नौ हज़ार पुआल की चप्पलें, चटाइयांऔर टोपियाँ खिलाईं. और उसके कारण ही दरियाई घोड़े, सर्दी और युद्ध से बच पाए.

अंत